बाल किलकारी

(बिहार बाल भवन का मासिक अखबार)

वर्ष–01, अंक–02

मूल्य 10/–

विशेषांक

पेड़

जुलाई 2015

किलकारी लाल

प्यारे दोस्तो,

हमारे जीवन में पेड़-पौधों का होना बहुत ही जरूरी है । क्योंकि पेड़-पौधा हमारे जीवन का मुख्य अंश है । अगर ये नहीं रहे तो हम सभी का होना नामुमकिन है । इस संसार की सुंदरता तो पेड़-पौधों से है । इनकी डालियों पर बैठ कभी कोयल मीठी राग सुनाती है। कभी चिड़ियों की चहचआहट से बादल झूम नाचते हैं। हम पीपल की पूजा कर लम्बी आयु की कामना करते हैं । कभी बरगद के नीचे बैठकर ठण्डी हवाओं का मजा लेते हैं, तो वहीं तुलसी का पता सर्दी-जुखाम में बड़ा काम आता है और नीम की क्या बात करें। इनकी पत्तों से तो मानो घमौरियाँ-फुन्सी छूँ मंतर हो जाती हैं ।

दोस्तो प्रकृति ने जब संसार का निर्माण किया तो सिर्फ इन्सान ही या पशु- पक्षी ही नहीं बनाए उसने पेड़-पौधे, पर्वत, नदी, जंगल भी बनाए । ये इसलिए कि इन्सान की जरूरतों को पेड़ पौधे पूरा करते हैं और पेड़-पौधों की जरूरत इंसान पशु-पक्षी पूरा करते हैं । ये निर्भरता ही इनका अस्तित्व बनाए रखती है । यही प्रकृति का सार है । हमारे पूर्वज इस ज्ञान से भली भाँति परिचित थे । तभी तो पहले के जमाने में घने जंगल, विशाल नदियाँ हुआ करती थीं । हमारी परम्परा में पेड़-पौधों का बड़ा महत्व हुआ करता था । शादी-विवाह में आम के पत्ते, बांस, बरगद के पत्ते नारियल का होना जरूरी रहता है। शुभ कार्यों में केले का पेड़, तरह-तरह के फूलों का होना जरूरी रहता है । यह सब हमारे पूर्वजों ने इसलिए बनाया कि यदि आने वाली पीढ़ी पेड़-पौधों का महत्व भूल भी जाए तो इन रीति रिवाजों के कारण पेड़-पौधों से जुड़े रहेंगे । पर आज की पीढ़ी पेड़ की महत्ता को भूल ही गई है रीति-रिवाज को भी भूलती जा रही है । तभी तो आज जंगल सिकुड़ते जा रहे हैं पेड़ कटते जा रहे हैं और उनकी जगह इंसानों के लिए इमारतें खड़ी हो रही हैं । ये सब बढ़ती जनसंख्या के कारण हो रहा है ।

दोस्तो, अगर यही हाल रहा तो एक दिन मनुष्य के अस्तित्व पर संकट आ जाएगा । इसलिए जरूरी है कि समय से पहले हम प्रकृति का सार समझें । पेड़-पौधें को मनुष्य के अनुपात में लगाएँ । साथ ही साथ नए लगे पेड़ों को संरक्षण दें। पुराने पेड़ों को काटने से बचाएँ । तभी हमारी धरती हरी-भरी पहले जैसी बन पाएगी । बोलो हम सब ऐसा करेंगे न ?

सुधाकर रवि एवं मुनटुन राज

प्रेरक प्रसंग

अर्जुन और कृष्ण में एक शर्त लगी । अर्जुन का मानना था कि सबसे दयालु और दानी युधिष्ठिर हैं । कृष्ण कर्ण को सत्यवादी और दयालु मान रहे थे । दोनों ने तय किया कि चल कर देखा जाए कि कौन ज्यादा दयालु और दानी है ।

कृष्ण ने अपनी शक्ति से खूब बारिश कराया । सारा जंगल, जमीन पानी से डूब गया फिर दोनों ब्राह्मणों का वेश बनाकर चले गए युधिष्ठिर के दरबार में । दरबार में जाकर ब्राह्मणों ने कहा कि महाराज सारी धरती पानी से डूब गयी है, देवता हमसे नाराज हैं, हम देवताओं को प्रसन्न करने के लिए यज्ञ करना चाहते हैं, बस महाराज, आप चन्दन की सूखी लकड़ी यज्ञ करने के लिए दे दें। यह सुन युधिष्ठिर गुस्सा हो गए, कहा कि मूर्ख इस समय सारी धरती जलमग्न है तो मैं तुम्हारे लिए सूखी लकड़ी कहाँ से लाऊँ। जाओ बाद में आना । यह सुन अर्जुन का मन उतर गया, उनका विश्वास टूट गया था, फिर भी उन्हें विश्वास था कि कर्ण भी ऐसा ही करेंगे ।

दोनों ब्राह्मण का वेश बनाकर कर्ण के दरबार में गए । दोनों ने फिर वही बात दोहराई, कर्ण चिंता में पड़ गए पूरी धरती जल से भरी है । सारे पेड़ भींगे हैं फिर कैसे लाऊँ सूखी लकड़ी । पर इन ब्राह्मण देवता को खाली हाथ भी कैसे जाने दूँ । कर्ण ने काफी सोचने के बाद हल खोजा और अपने तीर से अपने महल के सारे दरवाजे, खिड़की के लकड़ी तोड़ दिए और ब्राह्मण को देते हुए कहा कि ये लें ब्राह्मणदेव आप अपना यज्ञ अब संपन्न करें । ये सुन अर्जुन काफी लज्जित हुए । कृष्ण और अर्जुन अपने वेश में आ गए । अर्जुन ने कर्ण से कहा कि क्षमा करें मैं आपकी परीक्षा ले रहा था, मैं अपने भाई को सबसे दयालु और दानी मान रहा था पर वास्तव में आप सबसे दयालु और दानी हैं ।

बिमारी की छुट्टी

आँक्छी आँक्छी–आँक्छी आँक्छी
आ गयी छींक! हाय राम !
चबाओ तुलसी का पत्ता
मिटाओ सर्दी खाँसी जुकाम ।

खाकर रोज एक सेब
एनर्जी लेबल करो फुल
स्वस्थ रहो मस्त रहो
चुटकियों में बिमारी होगी गुल ।

घाव बहुत बड़ा हो तो
अम्माँ से बोलो नीम लगाएँ
इस दर्द भरे घाव को
चलो झटके में दूर भगाएँ ।
इसे लगाओं राहत पाओ
भगाओं पेट की कीड़ी
जड़ है इसका लाभदायक
नाम है इसका चिड़चिड़ी ।

बस इतना तुम लो जान
अपनी किस्मत है अपनी मुट्ठी
रखकर कुछ चीजों का ध्यान
कर दें बिमारी की छुट्टी ।

प्रियन्तरा भारती

विशेष कविता

धरती का धन

मत पूछो कि वृक्ष हमें
क्या-क्या देते हैं?
ढूँढ सको तो ढूँढ़ो कि
वृक्ष हमें क्या नहीं देते हैं
न जाने कितने औषधि
गुण इनमें भरे पड़े हैं
ये नीलकण्ठ हैं
जो विष लेकर अमृत देते हैं।
देख कर धरती का धन
सब मुस्कुराएँ हों मगन
सब खुशी के गीत गाएँ
झूम उठे धरती गगन

डॉ॰ रमाकांत पाण्डेय

पेड़ दादा

पेड़ दादा मुझे बताओ
जरा अपना हाल सुनाओ
क्यों तुम हो उदास ?
चलो मुझे गाना सुनाओ
चुप क्यों हो बताओ ना
कैसे बतलाऊँ अपना रोना ।
सुनता नहीं कोई मेरा कहना ।

रौशनी कुमारी
वर्ग– 2
स्कूल-एस्प्रींग फिल्ड

माथापच्ची

झंडा-वन्दन का अवसर था । कुल 24 सैनिक थे। अफसर ने सोचा कि आज झंडा-वंदन के लिए सैनिकों को कुछ नए ढंग से पंक्तियों में खड़ा करना चाहिए । उसने आदेश दिया - पाँच-पाँच सैनिकों की 6 पंक्तियाँ बनाओ ।

बताइए, कुल सैनिक 24 हों तो, प्रत्येक पंक्ति में 5 सैनिकों वाली 6 पंक्तियाँ कैसी बनेंगी?

तुम कहाँ जी ?

काजी-काजी-काजी
सुन लो हमारी बात जी
कहाँ गया सभ्य समाज जी
जो थोड़ी चोट पर लड़ जाता जी
क्या अब नहीं रहा
हमारे साथ चिपक कर
कट जाए खुद भी जी
खुद में खो गये हैं जी
मैं हूँ तो तुम भी जी
मैं नहीं तुम कहाँ जी ?

मनीष कुमार
वर्ग - XII

छोटा बीज

धरती की गोद में सोया
प्यारा सा एक बीज,
आयी आवाज
उठ जा प्यारे लाल हमारे
तू भी है कोई चीज ।
निकल जा धरती माँ के गोद से
डर मत प्यारे लाल
मैं साथ रहूँगी तेरे
प्यार से होगी देखभाल।
एक दिन तो तुझे
बड़ा पेड़ बनना है
संसार को तूझे भी अपने
मीठे-मीठे फल देना है।

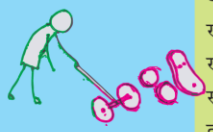

युवराज सिंह, वर्ग V

कहानी

बेजुबाँ पेड़

रेगिस्तान में एक पेड़ खड़ा था । हरे भरे पत्तों और टहनियों के साथ । हवा तेज चल रही थी । तभी एक चिड़िया मारीमारी पेड़ के पास आयी और पेड़ से पूछने लगी ''पेड़ भईया-पेड़ भईया - देखो, लग रहा है बड़ा तूफान आने वाला है तुम बड़े मजबूत मालूम पड़ते हो। क्यों मैं तूफान के थमने तक तुम्हारी डाली पर रह सकती हूँ ? ऐसे तो पेड़ ने कुछ नहीं कहा क्योंकि वो बेजुबां था । पर चिड़िया को लगा की वह उसे बैठने की इजाजत दे चुका है । इसीलिए चिड़िया पत्तों में छिप गई । कुछ ही देर में तूफान थम गया । चिड़िया बाहर आई । उसने पेड़ को बहुत धन्यवाद दिया । उसने उसकी प्रशंसा की । पेड़ बस सुनता रहा। फिर चिड़िया ने अपना रास्ता नाप लिया । कुछ दिन बाद चिड़िया फिर आयी और घोंसला बनाकर उसी पेड़ पर रहने लगी । धीरे-धीरे समय बीतता गया । चिड़िया ने चार अंडे दे दिए । एक दिन फिर उसी तरह जोरों का तूफान आया । जिस कारण चिड़िया का घोंसला गिर गया । तूफान रूकने के बाद चिड़िया ने पेड़ को दोषी माना। उसे लगा कि उसी ने उसके अंडे और घोंसले गिरा दिए । चिड़िया बहुत गुस्सायी पेड़ को खरी-खोटी सुनाने लगी। कहने लगी ये तो बिल्कुल अलुआ-सुथनी है अलुआ-सुथनी । मेरे अंडे फोड़ दिए मेरा घोंसला गिरा दिया इस अलुआ-सुथनी ने । बेचारा पेड़ बस चुपचाप सुनता रहा । चिड़िया उस पेड़ को मनहूस मानकर वहाँ से चलते बनी । तीन दिन बाद चिड़िया फिर आयी और पेड़ से माफी माँगने लगी । उसने कहा पेड़ भईया मुझे माफ कर दो। आपने मेरी इतनी मदद की और मैं आपको खरी-खेटी सुना गई । आप जैसे अच्छे पेड़ को बुरा समझकर मैंने अपने ही पैरों पर कुल्हाड़ी मार ली थी । उस दिन जो कुछ भी हुआ वो सिर्फ और सिर्फ तूफान की वजह से हुआ । पता है यहाँ से जाने के बाद मैंने कई पेड़ों से मदद माँगी पर किसी ने हाँ नहीं कहा और जिसने कहा भी तो वहाँ के पक्षियों ने मुझे मारकर मेरा कचूमर निकाल दिया । मुझे माफ कर दो पेड़ भईया मुझे माफ कर दो । इस बार भी पेड़ बस सुनता रहा और चिड़िया को लगा वह हाँ कह रहा है । उसने फिर कहा आप कितने अच्छे हो पेड़ भईया सब तुम्हें दुख देते रहते हैं तो भी तुम सह लेते हो और फिर उन्हीं की मदद भी करते हो । चिड़िया ने फिर से एक नया घोंसला तैयार किया। अब चिड़िया और पेड़ हँसी खुशी रहने लगी । हर बार चिड़िया यूँ ही इस बेजुबाँ पेड़ की बातें सुन लेती है ।

प्रियन्तरा भारती

कुछ नया करें

आओ गाड़ी बनायें

प्यारे दोस्तो हमसे बड़े हरदम तरह-तरह की गाड़ियों खरीदते हैं और चलाते हैं पर हम बच्चे उस गाड़ी को चला नहीं पाते हैं । इसलिए इस बार हम बेकार चीजों से बनी गाड़ी लाये हैं । इसे घर में भी बना सकते हैं । इसमें दो खराब चप्पल चाहिए जिससे तीन गोल चक्का काटना है । और एक स्याही खत्म वाला कलम लेना है उसे दो चक्का के बीच लगा देना है तथा थोड़ा सा एल्मुनियम चाहिए जिससे कलम के बीच एक छोर को बाँध देना है । तथा एक डंडा चाहिए डंडा में एल्मुनियम का दूसरा छोर अच्छे से सेट कर देना है । अब जो दूसरा चक्का बचा है उसे डंडा में लगा देना है। बस गाड़ी तैयार हो गई एकदम फटाफट-मस्त मस्त ।

राहुल कुमार वर्ग – VIIIt

बबलू-बबली के चुटकुले

☆ बबलू (बबली से) - मेरे परदादा ने 1857 के जंग में सारे दुश्मनों के पैर काट दिये थे ?

बबली - गर्दन क्यों नहीं काटी ?

बबलू - वो पहले ही कट चुकी थी ?

☆ बबलू -मेरी बहन का आज बर्थ डे है। मैं उसे क्या दूँ ?

बबली - एक मोबाइल दे दो ?

बबलू - मेरी बहन सीधी-साधी गाय जैसी है।

बबली - तो उसे एक किलो घास दे दो ।

☆ बबली - यार जब भी मैं तुम्हे फोन करता हूँ तुम्हारा मोबाईल स्वीच ऑफ रहता है।

बबलू - नहीं यार, वो तो मेरे मोबाइल की रिंग टोन है ।

☆ (बबलू-बबली आपस में शेरो-शायरी कर रहे थे।)

बबलू - ना जाने कब कोई तारा टूट जाए,

बबली - ना जाने कब आँखों से आँसू छूट जाए

बबलू - कुछ पल हमारे साथ में हँस लो,

बबली - ना जाने कब तुम्हारे दाँत ही टूट जाएँ ।

☆ बबलू - बंटी दुकानदार के पास आटा लेने जाता है ।

बबलू - ''एक लीटर आटा दे दो ।''

दुकानदार - ''बेटा, आटा किलो के हिसाब से मिलता है।''

बबलू - ''बोतल में एक किलो आटा दे दो ।''

दुकानदार - ''बेटा, आटा बोतल में नहीं आता ।''

बबलू - ''अच्छा''

दुकानदार - ''चलो तुम दुकानदार बनो, मैं बताता हूँ कि आटा कैसे लेते हैं ।''

बबलू - ''ठीक है ।''

दुकानदार - ''बेटा एक किलो आटा दे दो ।''

बबलू - बोतल लाये हो ।

☆ (बबलू एक महिने से अस्पताल में भर्ती था ।)

डाक्टर - ''बबलू तुम्हारी किडनी फेल हो गई है ।''

बबलू - (रोने लगा) ''ऊँ.....ऊँ.....ऊँ'' (फिर एका-एक हँसा)..... हा.....हा.....हा और बोला ''डाक्टर साहब, आप तो बहुत मजाक करते हैं । मेरी किडनी तो कभी स्कूल ही नहीं गई ।''

संग्रहण - आनंद राज

पेड़ों के बारे में कुछ जानकारियाँ

प्यारे दोस्तो,

पेड़ हमारे संसार की वनस्पतियों में सबसे ऊँचे हैं। पृथ्वी पर हम मनुष्यों के आने से बहुत पहले से यहाँ मौजूद हैं। पेड़ पहाड़ों पर, समुद्र-नदी तट पर और जाते रेगिस्तान में, सभी जगह उगते हैं। हम इन्हें सड़कों के किनारे, खेतों में और अपने घरों के बगीचों में उगते देखते हैं। जीवन के लिए पृथ्वी पर पेड़-पौधे पर्याप्त मात्रा में हैं, क्योंकि ये प्राणियों को जीने के हेतु ऑक्सीजन प्रदान करते हैं। पर क्या हमने कभी सोचा है कि ऐसे न जाने कितने पेड़-पौधे हैं जिनका आध्यात्मिक महत्त्व भी है।

दोस्तो क्या आपको पता है भगवान विष्णु का वास पीपल के पेड़े में क्यूँ कहा जाता है?क्योंकि एक बार वह राक्षस से बचने के लिए पीपल के पेड़ के पीछे छिप गये थे। इस पेड़ का तार्किक कारण देखें तो आप गौर कीजिएगा, कि इस पेड़ के पत्ते एक-दूसरे से सटे होते हैं, जिससे सूरज की किरणे छन कर जमीन तक नहीं आ पाती जिस कारण इसकी छाँव में अँधेरा रहता है। ऐसे ही अधिकतर महिलाएँ धागा बाँधकर इस वृक्ष की पूजा क्यूँ करती है...?इसके पीछे कारण यह है सावित्री-सत्यावन की कथा, जो काफी प्रचलित है। इसमें स्त्रियाँ अपने पति के लम्बी उम्र के लिए इस वृक्ष की पूजा करती हैं। दोस्तो, क्या आपको पता है गुजरात में श्रावण की सप्तमी की रात घर के निकट ही आम का पौधा अवश्य लगाया जाता है?फिर घर की औरतें उसकी पूजा करती है और बच्चों के आरोग्य रहने का वरदान माँगती हैं। कभी-कभी विघ्ननाशक गणेश की पूजा में आम की लकड़ी का स्तंभ रोप दिया जाता है।

एक लोककथा प्रचलित है कि महात्मा बुद्ध के जन्म के समय जैसे ही उनकी माता ने हाथ बढ़ाकर 'शाल' वृक्ष की डाल पकड़ी वैसे ही उनका जन्म हो गया। दक्षिण के प्रदेशों में वर्षा ऋतु के अंत में एक त्योहार आता है जिसे नारियल-पूर्णिमा कहते हैं। इस दिन सहस्त्रों नर नारी समुद्र किनारे जाकर समुद्र को नारियल अर्पित करते हैं।

अहमदाबाद में एक बड़े संत की समाधि के पास चंपक का एक बहुत बड़ा वृक्ष है उसकी डालियों को चूड़ियाँ चढ़ाई जाती हैं। वृक्ष का नाम देवदार है जो संस्कृत के देवदारू' शब्द से निकला है जिसका अर्थ है 'देवताओं का वृक्ष'। कहते हैं कि देवताओं को देवदार का पेड़ दूसरे पेड़ों की अपेक्षा अधिक प्रिय है, क्योंकि इसमें शान, सौंदर्य और शक्ति तीनों समाहित हैं। दोस्तों, एक मजे की किन्तु जानकारी की बात बताऊँ...?

मुजफ्फरपुर जिले की तुर्की नामक जगह में एक पेड़ है। एक बार कुछ लोग उस पेड़ को काटने गए क्योंकि वो रेलवे मार्ग के रास्ते में आ रहा था। जब लोगों ने उस पेड़ को काटना शुरू किया, तब उस पेड़ से लाल खून जैसा लेटेक्स निकलने लगा। उस समय वे लोग काफी डर गये थे। उस समय जब अँग्रेजों को यह बात पता चली तब वे उस पेड़ के पास गए और कहा ये तो लीविंग फोसिल्स है और बहुत अद्‌भुत पेड़ है। रिसर्च से यह बात पता चली है कि इस तरह के पेड़ अमेरिका और आस्ट्रेलिया में भी पाये जाते हैं, जिससे लाल लेटेक्स निकलता है। पर हमारे मुजफ्फर पुर का पेड़ काफी अलग है, किन्तु संभव है कि इनका परिवार एक ही हो। ऐसे ही अफ्रिका का डारलिंग टोनिय पेड़ जो दिखने में तो काफी खूबसूरत है पर यह पेड़ आदमखोर है। जिसके रहस्य के बारे में पता लगाया जा रहा है। ऐसे ही हमारे बिहार राज्य में मधुबनी जिला से एक किलोमीटर उत्तर में जगजीवन गाँव हैं जहाँ वह विशाल वृक्ष स्थित है। दोस्तों क्या आपको पता है कि यह वृक्ष कितने साल पुराना है...?अरे ..... थोड़ा सोचो..... क्या कहा ..... ?सौ साल .... । नहीं ... नहीं ... पाँच सौ साल ..... ! अरे नहीं बाबा .....। यह बट वृक्ष हजारों साल पुराना है। क्या हुआ ..... ?चौंक गए न ..... । और यह पेड़ अभी भी वहाँ दो एकड़ में फैला हुआ है। दोस्तो..... मुझे पता है कि आप सब को भी पेड़ों से खूब लगाव है... । अरे भई हो भी क्यों नहीं पेड़ हमें मीठे-मीठे फल, फूल, ऑक्सीजन और भी कई सारी उपयोगी चीजें देते है। हमारी पृथ्वी पर करीब 16 लाख तरह के पेड़ पौधे हैं। जो सभी हमारे लिए उपयोगी हैं। तो यह वादा रहा कि हम सभी दोस्त पर्यावरण को मिलकर बचाएँगे ! है न ।

पवन राज एवं गौरव

ग्रीष्मोत्सव-2015
चक धूम-धूम

कैमरे में किलकारी

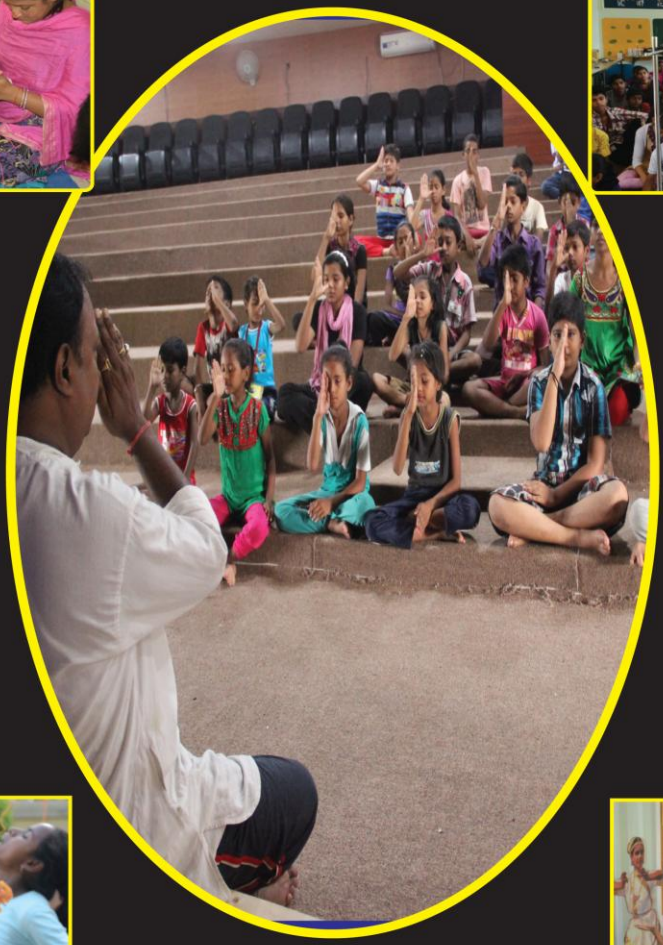

चल धूम-धूम 2015

बुझो-बूझौवल

1. आग लगे मेरे ही बल से
   हर इंसान की आती काम
   दिन में पौधे मुझे बनाते
   अब बतलाओं मेरा नाम ।
2. एक मुट्ठी राई
   सब जगह छितराई ।
3. डिब्बे पर डिब्बा,
   डिब्बे का गाँव,
   चलती फिरती बस्ती
   लोहे का पाँव ।
4. ऊँट की बैठक, हिरण की चाल
   वह कौन-सा जानवर, जिसका दुम न बाल ।

आज पहचाना

बिना पेड़ पौधों का
व्यर्थ ये जीवन है ।
पेड़-पौधों से ही,
मिलता ऑक्सीजन है ।

फूल मिले, फल मिले,
और मिले लकड़ियाँ ।
साग मिले, पात मिले,
और हरी-हरी सब्जियाँ ।

दवाओं के भी काम आये,
बरगद, पीपल, नीम ।
तरह-तरह के दवा बनाते,
डॉक्टर, वैद्य, हकीम ।

यह पेड़-पौधे, शायद
हमसे कुछ न लेते ।
पर स्वस्थ्य जीवन ।
हम सबको दे देते ।

पेड़-पौधे का महत्व,
हमनें जाना ।
इसका असली रूप,
आज पहचाना ।

सम्राट समीर
वर्ग – IX

उलझन

मेरे घर के पास था दो पेड़,
एक पीपल दूजा बरगद,
लोगों ने बरगद कटवा दिया,
बना दिया एक ऊँचा मकान ।
अब जब पीपल बड़ा होता,
बार-बार उसे कटवा दिया जाता,
बात ये मेरी समझ में नहीं आती,
क्यों कटता ये बार-बार?

गौरव राज
स्कूल-सी.सी.डी.एस., पटना

कहानी

एक पेड़ की आत्मकथा

मैं एक आम का वृक्ष हूँ । सड़क के किनारे खड़ा । एक ऐसी जगह जहाँ कई घर बसे हुए थे। जिस तरह यहाँ रह रहे लोगों को गाड़ियों की आवाजें सुनने और इनकी धुएँ सूँघने की आदत हो गई हैं, इसी तरह मुझे भी इसकी आदत हो गई थी । लेकिन इसका धुआँ मुझसे बर्दाश्त नहीं होता, पर क्या करूँ मजबूरी थी । जहाँ पर मैं खड़ा था, वह स्थान काफी साफ-सुथरा था। फिर एक गोलगप्पे वाले ने मेरे बगल में अपना ठेला लगाया। मेरे ऊपर जूठा पानी और पत्तल की कटोरियाँ फेंकने लगा । उन्हीं जूठे पानी के सहारे मैं बड़ा होने लगा । लेकिन इसके पानी और मसालों से वहाँ बदबू होने लगी । अब मेरे उपर औरतों ने जूठा गोलगप्पा का पानी फेंकना शुरू किया, फिर सभी लोगों ने । जैसे-जैसे मैं बड़ा होने लगा, वैसे-वैसे मेरे पास कचड़ों का ढेर बढ़ने लगा । कचड़े को वजह से गोलगप्पे वाले यहाँ से चले गए। अब मुझे कचड़ों के ढेर में ही रहना पड़ता । काश! हम वृक्ष भी चल पाते तो इन गाड़ियों के प्रदूषण और कचड़ों के ढेर से अलग रहते ।

जब भी ठंड का मौसम आता तो मैं बिल्कुल अकेला रहता । लेकिन गर्मियों में मुझे काफी खुशी मिलती । क्योंकि मैं आमों से लदा रहता हूँ । जिससे ढेर सारे बच्चे मेरे पास आते हैं । मेरे ऊपर ढेला मारकर टिकोले गिराते और मेरे उपर चढ़कर मेरी छाँव में बैठते । लेकिन मुझे इस बात का बहुत अफसोस होता है कि बच्चों को इन कचड़ों के ढेर पर खड़ा होना पड़ता है । शायद इन्हें ये नहीं पता कि कचड़े पर खड़े रहने से कितनी बिमारियाँ होती हैं । अगर मेरे पास ये कचड़ों का ढेर नहीं होता तो, ये सारे बच्चे मेरी छाँव में आराम से बैठ पाते । रास्ते पर आते-जाते लोग भी मेरी छाँव में खड़े होते तो उन्हें बहुत आराम मिलता । इन्हीं कचड़ों की वजह से मेरे पत्तों और फलों को कोई नहीं तोड़ता । काश! अगर मैं बोल पाता तो इन सबको जरूर समझाता कि पेड़-पौधों के पास बिल्कुल कचड़ा नहीं फैलाना चाहिए । लेकिन ये नहीं हो सकता। इसलिए हम वृक्षों को इतना प्रदूषणों का सामना करना पड़ता है ।

हर साल की तरह इस साल की गर्मी में भी मैंने बहुत टिकोले दिए । बच्चे भी आने लगे । अब तो बच्चे भी बड़े हो गए थे ।

एक शाम की बात है । बच्चों ने आपस में बात की कि इस कचड़े से हमें बहुत परेशानी होती है । इस पेड़ को भी होती होगी। क्योंकि ये कचड़े में खड़ा रहता है । ये पेड़ हमलोगों को ऑक्सीजन देता है । फिर सारे बच्चे अपने-अपने घर से कचड़ा उठाकर फेंकने वाला सामान ले आए । और सबों ने मिलकर सारा कचड़ा साफ कर दिया । वह जगह पहले की तरह साफ हो गया । बच्चों ने आपस में वादा किया कि यहाँ किसी को भी कचड़ा फेंकने नहीं देंगे । मैंने उन्हें मन-ही-मन दुआ दी । इस वर्ष ढेर सारे मीठे आम भी खिलाए।

तुलसी लवली

खोजबीन

कुछ अजीबोगरीब वृक्ष

हँसने वाले पौधे – यह वृक्ष फूलों से पटा था । पिसी हुई चीज डालने पर यह बालक के समान हँसने की आवाज करता है । **बोलने वाले पौधे** – इस वृक्ष में असंख्य छेद होते हैं, तेज हवा के समय उसमें भयानक चीखें और आवाजें सुनाई पड़ती हैं । अगर हम अपनी आँखे बंद करके इनकी आवाजें सुने तो हमें सचमुच लगेगा की ये बातें कर रहे हैं। **कंपन करने वाला वृक्ष**-सुबह यह वृक्ष अपनी शाखाओं को समेट लेता है और रात को चन्द्रमा की चाँदनी में उन्हें फैला देता है साथ ही कंपन करने लगता है । **दूध देने वाला वृक्ष** - यह वृक्ष उपर से तो बिल्कुल सूखा दिखाई पड़ता है किन्तु इसके तने और डालियों में छेद किए जाए तो बिल्कुल दूध जैसा द्रव टपकने लगता है । यह दूध बिल्कुल गाय-भैंस की दूध की तरह स्वादिष्ट तथा पौष्टिक होता है । बच्चे देने वाले पौधे - सामान्य पौधों की तरह उसमें फूल और फल होते हैं किन्तु इसके बीज जमीन पर नहीं गिरते हैं इसके फल में ही अंकुरित होकर यहाँ-वहाँ शाखाओं पर लटक जाते हैं और ये पेड़ के बच्चे कहलाते हैं । एक वृक्ष ऐसा भी है जो मक्खन देता हैं, इस वृक्ष का नाम बटर ट्री है । इस वृक्ष के गूदे को उबाल लेने के बाद उसका स्वाद हमारी दुनिया में खाए जाने वाले घी के सामान हो जाता है। ये बात जानकर आपको आश्चर्य होगा कि पेड़ भी आत्महत्या करते हैं । जब मनुष्य स्वयं अपने आपको मार लेता है, तो हम उसे आत्महत्या कहते हैं । जीव वैज्ञानिकों ने निरीक्षण-परीक्षण कर पाया है कि पेड़ भी आत्महत्या करते हैं टेकीगैलिया वर्सी कोलर नामक वृक्ष विविध प्रकार की चोटे सहन नहीं कर पाते और सूखकर नष्ट हो जाते हैं ।

ये सभी वृक्ष यह स्पष्ट करते हैं कि मनुष्य की सेवा केवल जानवर ही नहीं करते बल्कि प्रकृति के उद्यान में ऐसे सैकड़ों वृक्ष भी हैं जो हम मनुष्यों के लिए बड़े उपयोगी और लाभदायक है।

दोस्तों यह जानकर मजा आया न तो फिर तैयार रहना अगली बार नयी खोजबीन के लिए ।

आनन्द राज
वर्ग-XI

मीठे जामुन

दोस्तों के साथ खेल कूद कर,
जा रहा था घर ।
काले जामुन लटके थे,
मुँह में आया पानी भर ।

आपस में की कानाफूसी
सब छुप-छुपकर ।
गये बगीचे के अन्दर,
तोड़ने जामुन पॉकेट भर-भर ।

जामुन मुँह में डाला ही था,
आ गए तभी टकलू अंकल ।
उनकी बड़ी-बड़ी थी मूँछ ।
लग रही थी बकरी की पूँछ ।

लगाई एक जोरदार आवाज,
भागो ... सौरभ, विष्णु, सम्राट ।
आ रहे हैं टकलू यमराज,
मारने हमें डंडे से आज ।

टकलू अंकल डंडा दिखाए,
सब बच्चों को दूर भगाए ।
जामुन कोई भी खा न पाए,
ऐसे ही हम बच्चे पछताएँ ।

काश ! टकलू अंकल,
थोड़ी देर बाद आते ।
मीठे-मीठे जामुन,
हम बच्चे खा पाते ।

तरूण कुमार
VIII

नीम का पेड़

नीम का दतुअन,
शहर में टूथपेस्ट ।
नीम के प्रयोग से,
हो जाता है बेस्ट ।

नीम के पत्तों का रस,
खून साफ करता है ।
साथ-साथ ताजगी भी,
काफी बढ़ता है ।

इसके सूखे पत्तों को,
अनाज में रखते हैं ।
कीड़े-मकोडे भी,
इससे डरते हैं ।

मेरी नानी कहती है,
देवों का अर्शीवाद है नीम,
घर के आगे यह खड़ा है,
नहीं जरूरत है वैद्य हकीम ।

बैष्णवी कुमारी
वर्ग -VIII

[No.G1/Mail/Registration/Renewal/PT-73/2015

बाल किलकारी

लघुकथा

आहत

अरे । यह पौधा कहाँ से आया । नन्दू चापाकल से पानी पीते हुए बोला। उसने देखा चापकल के दायीं तरफ एक छोटा सा, नन्हा सा, प्यारा सा पौधा था। नन्दू सोचा यह पौधा आया कहाँ से मैंने तो लगाया नही। खैर, जो भी हो इस प्यारे से पौधे की देखभाल करूगाँ। नन्दू ने उसे चारों तरफ से लकड़ी से घेरा लगा दिया। उसे तो यह पता ना था, कि पेड़ पौधे खाते क्या है?उस पौधे की तरह यह भी छोटा सा बच्चा था। वह जो भी खाता चुपके से थोड़ा सा पौधे के पास रख आता। सुबह तक जब उसे चिड़िया खा जाती तो उसे लगता पौधे ने खाना खा लिया। धीरे-धीरे समय बीतता चला गया उसके साथ ही पौधा भी बढ़ने लगा। साथ ही साथ नन्हा सा नन्दू भी बड़ा हो चुका था। आज नन्दू हॉस्टल में जा रहा था। वह बीज पौधा से पलास का पेड़ बन चुका था। नन्दू उस पेड़ के पास आया और ढेर सारा चाकलेट रखकर बोला, अपना ध्यान रखना और भूख लगे तो चॉकलेट खा लेना। अरे ! क्या बड़ बड़ा रहा है पागलों जैसा जल्दी चलो। उसके पापा डाँटते हुए बोले। नन्दू रूआँसी आँखो से हॉस्टल चला गया। कुछ दिनो बाद पेड़ सोच रहा था, लोग कितने अच्छे होते है। हमारा कितना ध्यान रखते है। तभी उसे नन्दू के पापा की आवाज सुनायी दी अरे ! हाँ मेरा बेटा चला गया, अब आकर उस पेड़ को काट लेना। इतना सुनते ही पेड़ ने सोचा नहीं मानव कभी नहीं बदल सकते मैं गलत सोच रहा था।

–प्रवीण कुमार
वर्ग-V

कहानी

मुरझाए पत्ते

क्या बात है, मेरा मित्र नहीं आ रहा । इतने दिन हो गए । आज भी नही आया। काश ! मेरे पाँव होते तो मैं जाकर उससे मिल आता । अगर मैं बोल पाता तो उसका हाल-चाल पूछ आता। सड़क के बीचो-बीच खड़ा बूढ़ा बरगद अपने मित्र रामदीन के बारे में सोच सोच कर परेशान हो रहा था। रामदीन और पेड़ के बीच एक अलग सा रिश्ता था । हर दोपहर रामदीन खेती करके बरगद के छाँव में खाना खाता था। वह बदगद से भी पूछता। बदगद तो कुछ ना बोलता । पर ना जाने रामदीन को ऐसा क्यों लगता की बरगद हाँ बोल रहा है। इसलिए वह थोड़ा खाना उसके पास ही छोड़ देता। धीरे-धीरे रामदीन उससे अपने सुख दुख की बाते करने लगा। बरगद चुपचाप सुनता था। उन लोगों में कब दोस्ती हो गयी ना रामदीन को पता ना बरगद को । इस गाँव में बरगद सालों पहले से था। पर रामदीन जैसा दोस्त उसे आज तक ना मिला था। शायद इसलिए बरगद रामदीन की इतनी चिंता कर रहा था। बरगद रामदीन के ख्यालों में डूबा हुआ था, तभी उसे कुछ भीड़ दिखाई पड़ी, कुछ शोर सुनाई पड़ी। पास जाने पर पता चला किसी भी अर्थी है। तभी जोरो की हवा चली। और शव के उपर ढका चादर हट गया। बरगद ने शव को देखा, अरे यह क्या यह तो रामदीन का शव था। बरगद उदास हो गया। उसके सारे पत्ते मुरझा गया। वह फिर से सोचना लगा। एक दिन था। जब सड़क बनाने के लिए सरकारी लोग मुझे काटने आए थे। तब रामदीन उनसे लड़ गया था। मुझे बचाने के लिए। तब गाँव के सारे मर्द आगे आए। महिलाएँ भी आगे आयी। आखिर उनके नानी दादी का बाँधा हुआ धागा बरगद में आज तक बंधा हुआ था। उस दिन बरगद मरते मरते बचा था। और आज वह जिंदा रहते हुए भी मर सा गया। बरगद रामदीन के अर्थी को एकटक देखते हुए सोच रहा था। न भगवान ने मुझे इतनी लंबी उम्र दी, पर मेरे मित्र को इतनी जल्दी क्यो बुला लिया। बरगद रो नहीं सकता था पर उसके मुरझाए पत्ते उसके दुख दर्द कि गवाही दे रहे थे।

–अभिनदंन गोपाल
वर्ग - VIII

नन्हें कलाकार

निकीता

विक्रम राज

धनन्जय

शेवता

शेवता रानी

सौरव

आशा कुमारी

अमन

भेजें रचनाएँ

दोस्तो !

'बाल किलकारी अखबार' के प्रकाशन का मुख्य उद्देश्य-हम बच्चों की आवाज को बुलंद करना है और सृजनात्मक प्रतिभा को निखारना है। आप अपनी लिखी हुई कहानी, कविता, लघुकथा, चुटकूले। पहेली, चित्र, आपबीती, खेल, अखबार पर प्रतिक्रिया या रचनाएँ भेज सकते हैं। रचना के साथ अपना नाम, वर्ग, विद्यालय का पता, सम्पर्क नम्बर अवश्य ही भेजें। चुनी गई रचनाएँ अगले अंक में प्रकाशित की जाएँगी।

–बाल सम्पादक मंडल

घोषणा-पत्र

मैं ज्योति परिहार, निदेशक, बिहार बाल भवन 'किलकारी', सैदपुर, राजेन्द्र नगर, पटना-800004 यह घोषणा करती हूँ कि मैं बिहार बाल भवन 'किलकारी' के निदेशकीय दायित्व के अतिरिक्त बाल किलकारी की प्रकाशक, सम्पादक, व्यवस्थापक एवं मुद्रक के दायित्वों का निर्वाह भी मैं ही करूँगी।

ज्योति परिहार, निदेशक

सम्पादक की ओर से .....

हमें यह बताते हुए हर्ष हो रहा कि विगत छः वर्ष से किलकारी एवं बाद में हमारी किलकारी शीर्षक से प्रकाशित होती आ रही पत्रिका का RNI द्वारा 'बाल किलकारी' शीर्षक से प्रकाशित करने की अनुमति प्राप्त हुई है। अतः अब यह इस शीर्षक से हमारा यह दूसरा अंक प्रकाशित हो रहा है। अतः जुलाई अंक को वर्ष : 1 एवं अंक : 1 प्रकाशित करना हमारी वैद्यानिक विवशता है। अतः अब यह इसी क्रम से प्रकाशित होगी।

ज्योति परिहार
सम्पादक

वृक्ष तेरी दुर्दशा

ऐ वृक्ष तेरी शाखाओं पर,
चिड़ियों की गूँजती नहीं शोर,
डालियाँ तेरी पहले जैसी,
नहीं फैली चारो ओर।
तुझसे होकर नहीं गुजरता,
शुद्ध हवा का झोंका,
इतनी लड़खड़ा क्यों गई,
तुझे किसने रोका।
आम भी निराश है,
सूखे पत्ते बिखरे हर ओर।
अब तेरी डालियों पर,
बैठे नहीं माखन चोर।
हवा में जहर घुलने से
तू इतना मुरझा गया,
धरती की आवो हवा से
तू कितना घबरा गया।

अभिनंदन गोपाल
वर्ग - VIII

इस अंक के प्रतिभागी

सौरभ, राहुल, युवराज, प्रवीण, वैष्णवी, गौरवराज, राजा, अन्नु, सम्राट, खुशबू, विष्णु और तरूण
बाल सम्पादक-सुधाकर (बाल श्री विजेता), मुनटुन, तुलसी, अभिनन्दन, प्रियन्तरा, आनंद और मनीष।
संयोजक - सुधीर कुमार, डिजाईन-विवेक
विशेष सहयोग : डॉ० रमाकान्त पाण्डेय और मधुरिमा मिश्र
कार्यालय : किलकारी, बिहार बाल भवन सैदपुर, पटना-800004, बिहार

मुद्रक : राकेश प्रिंटिंग प्रेस, जय माँ गिरिजा कम्प्यूटर्स, मो-9470047022

इस अंक के जवाब

- बुझो-बूझोवल :
- ऑक्सीजन
- तारे
- रेल गाड़ी
- मेढ़क

माथापच्ची : 24 सैनिकों को एक षष्टभुज की आकृति में

दूरभाष : 0612-3224919, 2661295 ई मेल : info@kilkaribihar.org ब्लॉग : kilkaribihar.blogspost.in फेसबुक : www.facebook.com/kilkaribihar यूट्यूब : www.youtube.com/kilkaribihar

★ (बच्चों द्वारा रचित, संपादित एवं बच्चों के लिए बाल मासिक अखबार । इस अखबार में छपी हुई रचनाएँ बच्चों के व्यक्तिगत विचार हैं।) ★

(बच्चों के लिए समर्पित)